शिक्षकों में समूह अधिगम और सहभागिता को समर्थ बनाना

यादगीर (कर्नाटक), अल्मोड़ा (उत्तराखंड) और किवारली (राजस्थान) के कुछ मामलों का अध्ययन

शोध समूह | अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन



प्रस्तावना

उत्तर-पूर्व कर्नाटक में स्थित यादगीर देश के सबसे वंचित ज़िलों में से एक है।[1] उत्तराखंड का अल्मोड़ा ज़िला हिमालय की कुमाऊँनी पहाड़ियों पर समुद्र से 1800 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है, जहाँ ज़्यादातर छोटे-छोटे कस्बे और गाँव हैं। पीने के लिए साफ़ पानी, बिजली व स्वास्थ्य से जुड़ी बुनियादी सुविधाएँ यहाँ बमुश्किल ही उपलब्ध हैं। किवारली राजस्थान के सिरोही ज़िले के आबू रोड ब्लॉक का एक छोटा-सा गाँव है, जिसमें लगभग 800 परिवार रहते हैं।[2] इन तीनों जगहों पर सरकारी स्कूल के शिक्षकों के सामने काम करने के लिए अलग-अलग ढंग का लेकिन एक चुनौतीपूर्ण वातावरण है। इसके बावजूद, इन तीनों जगहों पर हमें तमाम ऐसी पहलक़दमियाँ देखने को मिलती हैं, जहाँ बिना किसी प्रशासनिक आदेश या बाहरी प्रोत्साहन के ख़ुद अपनी आन्तरिक प्रेरणा से, शिक्षक एक साथ आने के और अपने पेशेवर विकास के नए-नए तरीके ढूँढ़ रहे हैं।

1. अरूणीश चावला व अन्य, ‘रीजनल डिसपैरिटीज़ इन इंडिया – ए मूविंग फ्रंटियर’, *इकोनॉमिक एण्ड पोलिटिकल वीकली,* जनवरी 3, 2015; वॉल्यूम 1, नं. 1

2. भारत की जनगणना 2011

यादगीर में महिला शिक्षकों के समूह पुरुष-प्रधान समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक क़ायदों को लाँघने के तरीके ढूँढ़ रहे हैं ताकि वे अपने पेशेवर विकास की ज़रूरतों को पूरा करने में सक्षम हो सकें। अल्मोड़ा में शिक्षक उफ़ किए बग़ैर बेहद कठिन मौसम और दुर्गम भूभाग की चुनौतियों का सामना करते हुए अपने निजी समय में पेशेवर विकास की कोशिशों में जुटे रहते हैं। किवारली में शिक्षकों ने एक 'लर्निंग रिसोर्स सेंटर' (सीखने के लिए संसाधन केन्द्र) के निर्माण के लिए पूरे समुदाय को अपने साथ एकजुट किया है। ये प्रयास शिक्षकों के वास्तविक अनुभवों की, उनकी परिस्थितियों व उनकी ज़रूरतों की गहरी समझ पर आधारित रहे हैं।

लगभग डेढ़ दशक से भी ज़्यादा समय से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन (आगे से 'फ़ाउण्डेशन') सरकारी स्कूल व्यवस्था की गुणवत्ता को बढ़ाने का काम कर रहा है। इसके काम के केन्द्र में शिक्षकों की क्षमता का निर्माण रहा है क्योंकि, विद्यार्थी क्या सीखते हैं इसको प्रभावित करने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण कारक यही है। जिन अलग-अलग इलाक़ों में फ़ाउण्डेशन काम करता है, वहाँ वह शिक्षकों को उनके पेशेवर विकास के लिए अनेक अवसर उपलब्ध कराता है। इनमें कार्यशालाएँ, विभिन्न कोर्स, संगोष्ठियाँ, आवासीय कैम्प, टीचर फ़ोरम, स्कूल विजिट के ज़रिए ऑन-साइट सहयोग (यानी शिक्षक जहाँ काम कर रहे हैं उसी जगह पर उनको मदद पहुँचाना) और ऐसे ही तमाम दूसरे तरीक़े शामिल रहे हैं। ये सभी प्रयास एक व्यापक समेकित रणनीति का हिस्सा हैं जो शिक्षकों को पेशेवर विकास के तमाम तरीक़ों के बीच चुनाव करने के बहुत सारे अवसर मुहैया कराती है।

'फ़ील्ड स्टडीज़ इन एजुकेशन' (शिक्षा के मैदानी अध्ययन) की श्रृंखला में किए गए पिछले अध्ययनों में टीचर लर्निंग सेंटर (टीएलसी) और वालंटरी टीचर फ़ोरम (वीटीएफ़) की शुरुआत करने के अनुभवों को प्रस्तुत किया गया है।[3] इन अध्ययनों ने ऐसे मंचों को शुरू करने और उनको टिकाए रखने के लिए लगातार और उद्देश्यपूर्ण प्रयास करते रहने की ज़रूरत को रेखांकित किया है। साथ ही, इस बात पर भी ज़ोर दिया है कि ये मंच एक ऐसी जगह बनें जो आपसी भरोसे और सम्मान की संस्कृति को बढ़ावा दें और साथ ही, सही मायने में शिक्षकों की पेशेवर ज़रूरतों को पूरा करें।

इस संकलन में तीन मामलों के अध्ययन को प्रस्तुत किया गया है, जो ऐसे किसी व्यक्ति के लिए उपयोगी होगा जो भारत या ऐसे ही किसी विकासशील देश की जटिल परिस्थितियों के सन्दर्भ में, सरकारी स्कूल व्यवस्था के शिक्षकों के लिए एक प्रभावशाली पेशेवर विकास कार्यक्रम के क्रियान्वयन की समझ विकसित करने में दिलचस्पी रखता हो।

केस स्टडी 1 : महिला शिक्षक फ़ोरम, यादगीर

यादगीर ज़िले में फ़ाउण्डेशन द्वारा स्थापित कुछ चुने हुए टीएलसी में 14-15 महिला शिक्षकों के समूह शनिवार की दोपहर को स्कूल समय के बाद मिलते हैं। ये महिलाएँ विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में भाग लेती हैं और आपसी दिलचस्पी के मुद्दों पर बातचीत करती हैं, जिनमें महिला सशक्तिकरण, बाल मज़दूरी और जेण्डर से लेकर उनके कामकाज से सीधे जुड़े विषय जैसे कि गणित के विभिन्न दृष्टिकोण व शिक्षा पद्धतियाँ तक शामिल होते हैं। आमतौर पर हर बैठक एक महिला सदस्य द्वारा फैसिलिटेट की जाती है जो ख़ुद भी एक शिक्षक हो सकती है या फिर फ़ाउण्डेशन की सदस्य। इस तरह की मीटिंग अमूमन 2-3 घण्टे तक चलती है। इस मंच की बैठकें नियमित अन्तराल पर जब भी मौक़ा मिलता है आयोजित की जाती हैं। इनमें भाग लेने वाली महिला शिक्षक इन बैठकों

3. रिसर्च ग्रुप, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, स्टार्टिंग एण्ड सस्टेनिंग वॉलंटरी टीचर्स फ़ोरम्स, एक्सपीरिएंस फ़्रॉम टोंक, राजस्थान, फ़ील्ड स्टडीज़ इन एजुकेशन, अक्टूबर 2016; रिसर्च ग्रुप, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, सेटिंग अप टीचर लर्निंग सेंटर्स, एक्सपीरिएंसेस फ़्रॉम सम डिस्ट्रिक्ट्स ऑफ़ छत्तीसगढ़, कर्नाटक एण्ड राजस्थान, फ़ील्ड स्टडीज़ इन एजुकेशन, अगस्त 2017



महिला शिक्षक फ़ोरम की बैठकें

को ऐसी जगह की तरह देखती हैं जहाँ उनको किस्म-किस्म के मसलों पर बोलने का ही नहीं बल्कि सुने जाने का भी मौक़ा मिलता है; जहाँ उनकी उपस्थिति को स्वीकारा जाता है और उनके अनुभवों का सम्मान किया जाता है; और जहाँ उन्हें अपने ज्ञान और प्रतिभा को दिखाने का भी मौक़ा मिलता है।

महिला शिक्षक फ़ोरम बनाने का जो विचार है दरअसल उसकी बुनियाद में 'टीएलसी की गतिविधियों में महिला, शिक्षकों को शामिल करने की वे चुनौतियाँ हैं', जिनका सामना फ़ाउण्डेशन की टीम ने ख़ासतौर से यादगीर में किया है। ग़ौरतलब है कि यादगीर में महिला शिक्षक बड़ी संख्या में मौजूद हैं। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार, यादगीर के सुरपुर ब्लॉक के 349 स्कूलों में 38% शिक्षक महिलाएँ हैं।[4] लेकिन, यह अनुपात यादगीर के तमाम टीएलसी में फ़ाउण्डेशन द्वारा आयोजित औपचारिक या अनौपचारिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी में नहीं झलकता था।[5]

टीएलसी गतिविधियों में महिला शिक्षकों की सहभागिता के बारे में 2013 में किए गए फ़ाउण्डेशन के एक अन्दरूनी अध्ययन में यह पता चला कि टीएलसी में एक हफ़्ते में आयोजित पेशेवर विकास गतिविधियों में औसतन महज़ 4 महिला शिक्षक ही भाग लेती थीं जबकि पुरुष शिक्षकों का औसत 43 था। उस इलाक़े में महिला, शिक्षकों की बड़ी संख्या को देखते हुए फ़ाउण्डेशन के लिए यह बेहद ज़रूरी था कि पुरुष शिक्षकों के साथ-साथ महिला शिक्षक भी पेशेवर विकास की गतिविधियों में शामिल हों। इस तरह, महिला, शिक्षकों तक पहुँचने के लिए और उनसे टिकाऊ संवाद बनाए रखने के लिए यादगीर के तमाम टीएलसी में किए गए हस्तक्षेपों में से यह महिला, शिक्षक फ़ोरम एक हैं।



महिला शिक्षक फ़ोरम में परिचर्चा

इस केस स्टडी में यह फ़ोकस किया गया है कि इन फ़ोरमों की स्थापना किस तरह से हुई और साथ ही इसमें यह भी दिखाने की कोशिश की गई है कि पुरुषप्रधान समाज और काम की जगहों में निजी व पेशेवर चुनौतियों का सामना करने में लेडी टीचर फ़ोरम यानी एलटीएफ़ की महिला, शिक्षकों के क्या अनुभव हैं। इसके लिए शोरापुर, केम्बवी, नारायणपुर, हुनासागी, शाहपुर, काक्केड़ा और चमनाल के अलग-अलग टीएलसी में गठित महिला शिक्षक फ़ोरमों में भाग लेने वाली 18 महिला, शिक्षकों का साक्षात्कार लिया गया और साथ में, इन सभी टीएलसी के संयोजकों का भी, जो फ़ाउण्डेशन के सदस्य हैं।

4. डाइस (DISE) 2016–17 के आँकड़े

5. औपचारिक गतिविधियों में टीएलसी की वे गतिविधियाँ आती हैं जिनमें भाग लेने के लिए शिक्षा विभाग के औपचारिक आमंत्रण या आधिकारिक आदेश की ज़रूरत होती है जो शिक्षकों को इसकी इजाज़त दे। अनौपचारिक गतिविधियाँ वे हैं जिनमें शिक्षक अपनी स्वेच्छा से स्कूल के घण्टों के बाद भाग ले सकते हैं।

सामाजिक सन्दर्भ

योजना आयोग द्वारा 2014 में किए गए, भारत में आंचलिक ग़ैर-बराबरी पर केन्द्रित एक अध्ययन में पिछड़ेपन का एक सूचकांक विकसित किया गया। उसमें यादगीर देश के सबसे पिछड़े ज़िलों में 49वें स्थान पर है। इसकी कुल जनसंख्या 11.7 लाख है, और लिंगानुपात है 989 महिलाएँ प्रति 1000 पुरुष। साक्षरता दर है 51.8% जिसमें पुरुष साक्षरता दर 62.2% और महिला साक्षरता दर 42.3% है। साक्षरता में यह जेण्डर विभेद 19.9% है जो कि राज्य के औसत (14.7%) से ज़्यादा है। इसकी कुल जनसंख्या का 35.7% अनुसूचित जातियों व जनजातियों का है।[6] ज़िले में आजीविका कमाने के मौक़ों की कमी के चलते यहाँ से बड़ी संख्या में लोग रोज़गार की तलाश में मुम्बई, गोवा और बेंगलुरु जाते हैं।

इस अध्ययन के लिए जिन शिक्षकों का साक्षात्कार लिया गया उनमें से कईयों के अनुसार महिलाओं की ख़राब स्थिति का मुख्य कारण बालिकाओं की तालीम के लिए किसी तरह के सहयोग का अभाव और बाल विवाह प्रथा है, जो इस ज़िले में अब भी जारी है। कर्नाटक बाल अधिकार संरक्षण आयोग की रपट के अनुसार, देश में होने वाले बाल विवाहों में से 23% कर्नाटक में होते हैं, और यादगीर में इसका प्रचलन सबसे ज़्यादा है।[7]

बहुत सारे स्कूलों में शादीशुदा छोटी बच्चियों के नाम दर्ज हैं। शिक्षकों का कहना है कि उनके स्कूलों में हर साल दो या तीन ऐसी बच्चियाँ ज़रूर होती हैं जिनके परिवार वाले सातवीं या आठवीं पूरी करते ही ज़बरन उनकी शादी करा देते हैं। एक शिक्षिका ने 14 साल की उम्र में शादी के अपने अनुभव को साझा किया : *"मेरे पिता प्राइमरी स्कूल में शिक्षक थे और मेरे परिवार के कई सदस्य शिक्षित थे और सरकारी नौकरियों में थे। लेकिन परिवार के दबाव के चलते मुझे 14 साल की उम्र में ही एक नज़दीक के रिश्तेदार से शादी करनी पड़ी। बाल विवाह की तकलीफ़ें और बुरे नतीजे मैंने ख़ुद झेले हैं। इसी वजह से मैं जागरूकता कार्यक्रम करवाती हूँ और साथ ही किशोरी बच्चियों के लिए किशोरी मेला भी आयोजित करवाती हूँ ताकि लोगों को बाल विवाह के दुष्प्रभावों के बारे में शिक्षित कर सकूँ। लेकिन इन सब के बावजूद मैं गाँव में बाल विवाह रोकने में या उनकी संख्या को कम करने में कामयाब नहीं हो सकी हूँ"।*

शिक्षकों के अनुसार यादगीर में महिलाओं में आर्थिक सामर्थ्य की कमी का कारण भी उनकी ख़राब सामाजिक स्थिति ही है। आर्थिक रूप से स्वावलम्बी महिलाओं का भी ख़ुद अपनी कमाई पर नियंत्रण कम ही होता है। एक शिक्षक के अनुसार, *"अपनी घरेलू ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए पैसे कमाने वास्ते महिलाएँ औपचारिक व अनौपचारिक दोनों तरह के काम करती हैं। लेकिन वे जो कुछ भी कमाती हैं वो घर के मुखिया के हवाले कर दिया जाता है। परिवार के बुज़ुर्ग सदस्यों की रज़ामन्दी के बग़ैर ख़ुद के कमाए पैसे को खर्च करने का अधिकार उनके पास नहीं होता है। आमतौर पर आर्थिक नियंत्रण पति या ससुर के हाथ में होता है। इसके चलते समाज में महिलाओं की आवाज़ दब जाती है।"*

शक्तिहीनता के इस अहसास का असर उनकी पेशेवर ज़िन्दगी पर भी पड़ता है। एक महिला, शिक्षक ने अपने गुस्से का बयान कुछ इस तरह से किया, *"जब किसी कार्यशाला या ट्रेनिंग में मैं कुछ बोलती हूँ या अपने अनुभव व चिन्ताएँ साझा करती हूँ, उनको न तो सुना जाता है, न ही उनपर कोई विचार किया जाता है। मेरे साथ के पुरुष प्रतिभागियों ने या तो मुझे*

6. भारत की जनगणना 2011

7. इंडियन एक्सप्रेस, 26 सितम्बर 2017 http://www.newindianexpress.com/states/karnataka/2017/sep/26/karnataka–home–to–23–per–cent child–marriages–in–country–1662732.html

अनदेखा किया या फिर मेरा मज़ाक उड़ाया। इसलिए मुझे अब बोलते हुए झिझक होती है। मैं अपने विषय की रिसोर्स पर्सन या फिर एक संकुल रिसोर्स पर्सन बनना चाहती हूँ[8] *लेकिन अगर आप विभाग में लैंगिक बराबरी की हालत पर नज़र डालें तो पाएँगे कि बहुत ही कम महिलाएँ संकुल रिसोर्स पर्सन बन सकी हैं। मैंने जब भी यह बात कही, लोगों ने मुझे हतोत्साहित करते हुए कहा कि मेरे पास एक नौकरी है, वेतन भी मिलता है और मुझे इतने से ख़ुश रहना चाहिए; कि रिसोर्स पर्सन की ज़िम्मेदारी मैं निभा ही नहीं पाऊँगी।"*

इस तरह के पुरुष वर्चस्व पर आधारित समाज में महिलाओं को सार्वजनिक गतिविधियों व कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता, ख़ासतौर से अगर ऐसे कार्यक्रम शाम को हों।

पेशेवर विकास की राह में बाधाएँ

टीएलसी में आयोजित होने वाली पेशेवर विकास की गतिविधियों में भाग लेने में महिला, शिक्षकों को लगता था कि अगर उनको पुरुष शिक्षकों के साथ देखा गया तो समाज के लोग उन पर उँगली उठाएँगे। अपनी झिझक को सामने रखते हुए एक महिला, शिक्षक ने कहा, *"मैं जब भी किसी टीएलसी में गई, वहाँ पुरुषों का जमावड़ा ही दिखा। वे वहाँ कैरम या बैडमिंटन खेलते रहते थे। सारी जगह पर उन्होंने ही क़ब्ज़ा जमाया हुआ था।"* आत्मविश्वास की कमी और हिचकिचाहट इन महिला, शिक्षकों के नज़रिए को भी प्रभावित करती थी। वे आगे कहती हैं, *"एक बार जब मैं वहाँ अकेले गई और फिर एक बार जब अपनी एक साथी महिला, शिक्षक के साथ गई, तब पुरुषों के उस बड़े समूह ने मुझपर फ़ब्तियाँ कसीं और मेरे ऊपर वे हँसे भी; इन सब से मुझे बेहद शर्मिन्दगी और असहजता महसूस हुई।"*

इन सबके अलावा, महिला, शिक्षकों को यह भी लगता था कि उनको अपनी पेशेवर और घरेलू ज़िम्मेदारियों के बीच सन्तुलन भी बनाना था। इसके चलते टीएलसी जाने या वहाँ आयोजित की जाने वाली पेशेवर विकास गतिविधियों में भाग लेने के लिए समय निकाल पाना उनके लिए सम्भव नहीं हो पाता था। उन्होंने यह बताया कि आमतौर पर पुरुषों की तुलना में महिलाओं के ऊपर घर की ज़िम्मेदारियाँ ज़्यादा होती हैं। घरेलू कामकाज के अलावा उनको खेती-किसानी के काम भी देखने होते हैं और बच्चे भी सँभालने होते हैं। और इन सब के साथ बतौर शिक्षक उनकी पेशेवर ज़िम्मेदारियाँ भी हैं। अपनी निराशा का इज़हार करते हुए एक महिला-शिक्षक ने बताया, *"हाल ही में मैंने फ़ाउण्डेशन द्वारा धारवाड़ में आयोजित एक आवासीय कार्यशाला में हिस्सा लिया। लेकिन मैं कार्यशाला में ध्यान लगा ही नहीं पा रही थी क्योंकि मेरे बच्चे घर पर थे और मेरे परिवार वाले लगातार फ़ोन कर के मुझे वापस आने को कह रहे थे क्योंकि वे बच्चों को सँभाल नहीं पा रहे थे। साथ में, दूसरे घरेलू काम भी थे।"*

महिला शिक्षक फ़ोरम का विकल्प

ज़िले में लम्बे समय तक काम करने के बाद धीरे-धीरे फ़ाउण्डेशन की टीम को यह समझ में आया कि महिला शिक्षकों के ऊपर उनके सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ का बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ता है और उनको टीएलसी तक लाने के लिए महज़ वहाँ पहुँचने में आसानी और सुविधा का होना पर्याप्त नहीं था। ज़रूरत इस बात की भी थी कि महिला शिक्षक ख़ुद को वहाँ सामाजिक व भावनात्मक तौर पर सुरक्षित महसूस करें। यह समझ में आने के बाद टीएलसी संयोजकों और फ़ाउण्डेशन के दूसरे सदस्यों को महिला, शिक्षकों के लिए अलग जगह (सेंटर) बनाने का विचार आया। ऐसी जगह जो खासतौर से उन्हीं के लिए हों। जो उनके लिए सुरक्षित हों, सुविधाजनक हों और उनकी दिलचस्पी के अनुरूप भी हों।

बतौर शुरुआती क़दम फ़ाउण्डेशन के सदस्यों ने स्कूलों के व्यापक दौरे किए और

8. स्कूल शिक्षा व्यवस्था में संकुल स्तर पर शिक्षकों व स्कूलों को समर्थन देने की भूमिका

महिला शिक्षकों के बारे में जानकारी इकट्ठा की साथ ही, उन्होंने इसमें सबसे ज़्यादा दिलचस्पी दिखाने वाली महिला शिक्षकों को चिह्नित किया, उनसे सहयोग की अपील की, और विशेष गतिविधियों के लिए उनको आमंत्रित भी किया। महिला शिक्षकों के बारे में जुटाई गई जानकारियों से टीम को उनकी विशिष्ट व्यक्तिगत पृष्ठभूमि, उनकी अभिरुचियों, उनके स्कूल व जो विषय वे पढ़ाती थीं उनके बारे में जानकारी मिली जिससे टीम को समान अभिरुचियों के समूह बनाने में मदद मिली। टीएलसी आने में इन महिला शिक्षकों की हिचक को कम करने के लिए उस समय जारी कुछ स्वैच्छिक शिक्षक फ़ोरमों में नियमित जाने वाली महिला शिक्षकों की मदद ली गई कि वे अपने सहकर्मियों को भी आगे आने के लिए प्रेरित करें। स्कूलों में जाकर महिला शिक्षकों से बातचीत करने और विभिन्न गतिविधियों में उनको आमंत्रित करने के लिए एक महिला साक्षरता कार्यक्रम से वालंटियरों को भी काम में लगाया गया।[9]

महिला शिक्षकों के छोटे-छोटे समूहों के लिए कार्यशालाएँ आयोजित की गईं ताकि जेण्डर ग़ैर-बराबरी, महिला स्वास्थ्य और महिलाओं के अधिकारों जैसे विविध प्रकार के मसलों के बारे में उनकी समझ विकसित हो सके। एक शिक्षिका ने बताया कि महज़ यह जानने से कि उनके सामने किस तरह के विकल्प हैं उन्हें ज़्यादा मज़बूत होने का अहसास हुआ, *"हमने ऐसे मुद्दों के बारे में बातचीत की जो हमारी ज़िन्दगी से जुड़े हुए हैं। इससे हमें काफ़ी हिम्मत मिली और समाज का सामना करने में मदद भी। हमने यह भी सीखा कि हम ख़ुद की सुरक्षा कैसे कर सकते हैं, और यह भी कि क़ानून महिलाओं के बारे में क्या कहता है, और ऐसे और भी तमाम मसलों के बारे में हमें जानने को मिला। इनमें कुछ मुद्दों पर हमने अपने स्कूल में अपने सहकर्मियों और विद्यार्थियों से भी बातचीत की। हो सकता है कि इन समस्याओं को हम अपने आप न सुलझा सकें, लेकिन कम-से-कम हम जिन लोगों के साथ काम कर रहे हैं उनको तो ज़्यादा जागरूक कर सकते हैं।"*

इन कार्यक्रमों पर जो प्रतिक्रिया मिली उससे फ़ाउण्डेशन की टीम को बड़ी हिम्मत मिली। इससे सहभागिता और पियर लर्निंग के मंच के रूप में महिला शिक्षक मंच (आगे से 'एलटीएफ़') के विचार को आगे ले जाने का रास्ता खुल गया। इन फ़ोरमों के सत्र के लिए क्या समय रखा जाए, यह तय करना हमारे लिए थोड़ा

तालिका-1 : एलटीएफ़ में महिला शिक्षकों की भागीदारी

टीएलसी जहाँ एलटीएफ़ हैं	टीएलसी के 5 किमी के दायरे में काम करने वाली महिला शिक्षक	एलटीएफ़ सत्रों के ज़रिए जिन महिला शिक्षकों तक पहुँचा जा सका उनकी कुल संख्या	% पहुँच
शोरापुर टीएलसी	149	120	80
केम्बवी टीएलसी	96	58	60
नारायणपुर टीएलसी	34	31	91
हुणसागी टीएलसी	60	32	53

9. महिला साक्षरता कार्यक्रम एक प्रायोगिक हस्तक्षेप था जो 2014 में यादगीर के शोरापुर तालुक़ा में चलाया गया था। इसमें उन बालिकाओं को चिह्नित किया गया जो अपनी पढ़ाई तो जारी रखना चाहती थीं मगर 11वीं या 12वीं के बाद आर्थिक तंगहाली के चलते पढ़ाई छोड़ने पर मजबूर हुई थीं। इन बालिकाओं को इस शर्त पर छात्रवृत्ति दी गई कि ये कुछ समय (शाम को और हफ़्ते के अन्तिम दिन) गाँव की महिलाओं से बातचीत करेंगी और उनको बुनियादी साक्षरता सीखने में मदद करेंगी।

शाहपुर टीएलसी	121	26	21
काक्केणा टीएलसी	20	13	65
चमनल टीएलसी	40	10	25
कुल	**520**	**290**	**55.7**

चुनौतीपूर्ण था। महिला शिक्षकों का ज़ोर इस बात पर था कि इन फ़ोरमों की बैठकों का समय स्कूल समय में ही रखा जाए, लेकिन यह सम्भव नहीं था क्योंकि इसकी गतिविधियाँ स्वैच्छिक थीं और शिक्षा विभाग इसमें शामिल नहीं था। शाम का समय तय करने पर महिला शिक्षकों को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता था जिनका ज़िक्र पहले किया जा चुका है। कुछ आज़माइशों के बाद यह तय हुआ कि फ़ोरम की बैठक आमतौर पर शनिवार की दोपहर को रखी जाए। लेकिन इस समय को लेकर कोई सख़्त रवैया नहीं अपनाने का फ़ैसला भी हुआ ताकि विशेष परिस्थितियों में इसमें बदलाव की गुंजाइश बनी रहे। महिला, शिक्षकों की सामूहिक सुविधा को देखते हुए कभी-कभार इसकी बैठकें इतवार को, कभी छुट्टी के दिन या फिर कभी स्कूल समय के बाद शाम को तय की जाती थीं। लेकिन, जैसा कि हमारा अनुभव रहा है, ज़रूरी नहीं कि तय किया गया समय सभी महिला, शिक्षकों के लिए सुविधाजनक साबित हो, कई बार कुछ महिला शिक्षकों के लिए घरेलू ज़िम्मेदारियों से छुट्टी ले पाना सम्भव नहीं हो पाता। कुछ महिला शिक्षक, जो घर से दूर किसी गाँव में काम कर रही होती हैं, उनको हर शनिवार अपने घर जाना होता है और इस वजह से वे शनिवार की दोपहर की बैठक में हिस्सा नहीं ले पातीं। इसके चलते, सभी की ज़रूरतों को ध्यान में रखने की पूरी कोशिश के बावजूद फ़ोरम की बैठकों को नियमित आयोजित कर पाना सम्भव नहीं हो पाया।

महिला शिक्षक फ़ोरम में बातचीत के लिए चुने गए शुरुआती विषय आमतौर पर सभी महिलाओं और विशेष तौर पर इन महिला शिक्षकों की ज़िन्दगी से जुड़े मुद्दों व चिन्ताओं से गहरे जुड़े हुए थे जैसे कला व हस्तशिल्प, योग की उपयोगिता, कम्प्यूटर की शुरुआती जानकारी, लैंगिक भेदभाव, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य व सफाई, महिलाओं के लिए क़ानून, कहानी पाठ व आत्मप्रेरणा आदि। इनमें से कई विषय इन महिला शिक्षकों की भावनाओं को छूने वाले थे; और उनको एक सुरक्षित जगह पर एक दूसरे से घुलने-मिलने का, अपने विचार प्रकट करने का, और मिलजुल कर कुछ सरल-सी गतिविधियों में भाग लेने व उनका आनन्द उठाने का मौक़ा देते थे। धीरे-धीरे वहाँ होने वाली बातचीत के विषयों में बदलाव आना शुरू हुआ और ऐसे विषयों पर बातचीत शुरू हुई जो उनके पेशेवर विकास के मुद्दों से ज़्यादा क़रीब से जुड़े हुए थे। मिसाल के लिए, शिक्षा के बारे में अलग-अलग नज़रिए, बच्चे कैसे सीखते हैं इसकी समझ विकसित करना, शारीरिक सज़ा के नतीजे और ऐसे तमाम दूसरे विषय।

ज़्यादातर सत्रों में फ़ैसिलिटेटर की भूमिका ख़ुद महिला शिक्षक व फ़ाउण्डेशन के सदस्य निभा रहे थे। समय बीतने के साथ जैसे-जैसे महिला शिक्षक इसकी अभ्यस्त होती जा रही थीं, वैसे-वैसे टीएलसी संयोजक उन्हें ही सत्रों का फ़ैसिलिटेशन करने के लिए प्रोत्साहित करते व इसमें उनका सहयोग भी करते। कुछ मामलों में जब चर्चा के विषय संवेदनशील हों और उनको उसपर बातचीत शुरू करने में हिचकिचाहट महसूस हो रही हो तो संयोजक अपनी तरफ़ से सवाल उठा कर या बातचीत को शुरू करके प्रक्रिया को एक ख़ाके में सूत्रबद्ध करके उसे आगे बढ़ाते हैं। आमतौर पर हर बैठक में ही अगली बैठक का विषय आपसी सहमति से तय किया जाता है।

महिला शिक्षक फ़ोरम के बारे में महिला शिक्षकों की प्रतिक्रिया

सन् 2014 से ज़िले के 7 टीएलसी में 250

से भी ज़्यादा महिला, शिक्षकों ने स्वेच्छा से इन फ़ोरमों की गतिविधियों में हिस्सा लिया है। इसकी हर बैठक में औसतन 10–15 प्रतिभागी शामिल होते हैं।

एलटीएफ़ सत्रों के महत्त्व को रेखांकित करते हुए एक महिला, शिक्षक ने कहा, *"पुरुष, समाज में ऊँचे दर्जे पर होने का मजा ले रहे हैं। महिलाएँ जितनी मेहनत करती हैं उसकी कद्र कोई नहीं करता; सभी हमारे बारे में गलत ही सोचते हैं। आज मैं मास्टर रिसोर्स पर्सनों की ट्रेनिंग में भाग लेती हूँ क्योंकि टीएलसी और एलटीएफ़ मुझे ऐसी गतिविधियों में भाग लेने के लिए खासतौर से प्रोत्साहित करते हैं। इस तरह के सहयोग की ज़रूरत हर महिला शिक्षक को होती है।"*

पिछले तीन सालों में इन टीएलसी में कुछ बदलाव देखने को मिले हैं। कुछ महिला शिक्षक, अमूमन हर एलटीएफ़ से 2 या 3, सामान्य वीटीएफ़ में भाग ले रही हैं जहाँ पुरुष शिक्षक भी मौजूद होते हैं। वे शाम की साप्ताहिक बैठकों में भी हिस्सा लेती हैं जो शाम 6 से 8 बजे के बीच में होती हैं। अब वे टीएलसी की दूसरी गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिए भी तैयार हैं और वे टीएलसी की सामग्री का इस्तेमाल भी करने लगी हैं।

सम्भव है कि एलटीएफ़ प्रत्यक्ष तौर पर इन सभी बदलावों की वजह न हो। लेकिन, इतना दावा तो साफ़ या स्पष्ट तौर पर किया जा सकता है कि जिन महिला शिक्षकों ने एलटीएफ़ की बैठकों में नियमित भाग लिया है उनके लिए यह एक सशक्त करने वाला अनुभव रहा है। एलटीएफ़ की बैठकों में उनको यह अहसास हुआ कि उनकी मौजूदगी को स्वीकार किया जा रहा है। जैसा कि एक महिला शिक्षक ने इस बारे में अपनी सन्तुष्टि का बयान करते हुए कहा, *"मेरे यहाँ आने की सबसे पहली वजह तो यह है कि यहाँ हमें ऐसी जगह मिलती है जहाँ हम खुल कर रह सकते हैं और साथ मिलकर हँसी-मज़ाक कर सकते हैं। चूँकि बाहर के समाज में हमारे लिए ऐसी कोई जगह नहीं है, इसलिए यह फ़ोरम ही हमारे लिए एक ऐसा मंच है जहाँ हम मिलजुल कर मज़े में रह सकते हैं। दूसरी वजह यह है कि मुझे कुछ ऐसे सत्र फ़ैसिलिटेट करने की ज़िम्मेदारी भी दी गई जिनमें मुझे दिलचस्पी थी। इससे मुझे फ़ोरम की गतिविधियों में नियमित भाग लेने की प्रेरणा भी मिली है। सम्मान मिलना, अपनी बात कहने और सुने जाने की आज़ादी और पेशेवरों की तरह सुलूक किया जाना कई महिला, शिक्षकों के लिए बिल्कुल ही नया, असरदार व भावुक अनुभव रहा है।"*

एक और महिला, शिक्षक ने बताया कि किस तरह एलटीएफ़ ने उन्हें उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने का मौक़ा दिया, जो उनको अन्यथा न मिलता। बड़े उत्साह से उन्होंने बताया, *"मुझे साहित्य में दिलचस्पी है। मैं साहित्य से जुड़े लेख लिखती हूँ और पर्चे भी प्रस्तुत करती हूँ। टीएलसी ने इस तरह के बहुत सारे मौक़े मुझे दिए हैं। ये सबकुछ मैं विभाग में रह कर न कर पाती; लेकिन टीएलसी के होने से कर पा रही हूँ। मैंने बाल साहित्य, कन्नड़ साहित्य, वचन साहित्य (एक प्रकार का कन्नड़ गद्य), और लोक साहित्य पर कई जगह पर्चे प्रस्तुत किए हैं और कन्नड़ की कई कार्यशालाओं में भाग लिया है।"*

एलटीएफ़ में महज़ भाग लेने से यह जो मौक़ा मिलता है ख़ुद को सक्षम बनाने का, उसके अलावा, वहाँ जो बातचीत होती है वह भी उसमें हिस्सा लेने वाले प्रतिभागियों के लिए आत्मविश्वास और सशक्तिकरण का स्रोत रहे हैं। कुछ चर्चाओं ने तो इन महिला शिक्षकों को सीधे-सीधे उनके अधिकारों व विकल्पों के बारे में सचेत किया। शिक्षा से जुड़ी दूसरी चर्चाओं से उनको कक्षा में मदद मिली है। शिक्षा के बारे में बुनियादी मसलों पर हुई चर्चाओं, मसलन, 'स्कूल का डर', 'बच्चों के सीखने पर शारीरिक सज़ा का असर', 'शिक्षक व शिक्षण' आदि ने उनकी समझ को विस्तृत किया है और उनकी शिक्षण पद्धति में बेहतरी का रास्ता खोला है। एक महिला शिक्षक ने बताया कि किस तरह 'अन्धविश्वास' पर हुई एक चर्चा ने उनके पढ़ाने

के ढंग पर गहरा असर डाला, *"फ़ोरम में एक बार हमने 'समाज में अन्धविश्वास' विषय पर चर्चा की। विज्ञान की शिक्षक होने के बावजूद मैं ख़ुद भी कुछ अन्धविश्वासों को मानती रही हूँ। उस बातचीत से मुझे अपने इन अन्धविश्वासों से मुक्त होने में मदद मिली। अब मैं स्कूल में नियमित रूप से विज्ञान के प्रयोग करवाती हूँ और बच्चों को आसपास की घटनाओं के पीछे के विज्ञान को समझाने के लिए टीएलसी की सामग्री का इस्तेमाल करती हूँ।"*

एलटीएफ़ ने महिला शिक्षकों को अपने सहकर्मियों से पेशेवर की तरह मिलने-जुलने, अनुभव साझा करने और एक-दूसरे से सीखने का मौक़ा दिया है। एक शिक्षक बताती हैं कि किस तरह उनको अपने एलटीएफ़ के साथियों से ही पढ़ने-पढ़ाने के नए-नए विचार मिले, *"फ़ोरम में हमारी मुलाक़ात दूसरी महिला शिक्षकों से होती है और हम स्कूल से जुड़े मसलों और व्यक्तिगत मसलों पर बातचीत करते हैं। एक बार मैंने अपने स्कूल में बच्चों के लेखन कौशल को सुधारने के मसले पर बातचीत की। समूह की एक शिक्षक जिन्होंने वैसी ही चुनौती का सामना पहले किया था, उन्होंने अपने अनुभव साझा किए। इस तरह अपने स्कूल में भी कुछ करने के लिए मुझे उनसे कुछ सुझाव मिल गए। मेरी पेशेवर ज़िन्दगी में आने वाली दूसरी चुनौतियों से निपटने के लिए भी मुझे यहाँ से मदद मिलती है। पहले मुझे अपने बच्चों को कला सिखाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन फ़ोरम में जाने के बाद मुझे यह बड़ा आसान लगता है और मैंने अपने बच्चों को कला सिखाना शुरू कर दिया है।"*

एलटीएफ़ में होने वाली चर्चाओं व गतिविधियों में भाग लेने के अलावा, महिला शिक्षक फ़ैसिलिटेशन की और कुछ बड़े कार्यक्रमों के आयोजन की ज़िम्मेदारी भी लेती हैं। वे अपनी मर्जी से यह ज़िम्मेदारियाँ लेने के लिए आगे आती हैं। ऐसे ही एक कार्यक्रम में भाग लेने वाली एक महिला शिक्षक अपने अनुभव साझा करते हुए बतलाती हैं, *"हमने महिला दिवस का आयोजन किया था। कार्यक्रम की योजना बनाने से लेकर उसके क्रियान्वयन की सारी ज़िम्मेदारी हम शिक्षिकाओं ने ही निभाई। हमें यह लग रहा था कि ये हमारा अपना कार्यक्रम है, और हमने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की जी-जान से कोशिश की। मंच महिला, शिक्षकों से भरा हुआ था। सारे काम हमीं लोग कर रहे थे- मंच संचालन, दूसरी व्यवस्थाएँ, भाषण तैयार करना, मेहमानों का ध्यान रखना, वग़ैरह। मैं इस कार्यक्रम को कभी नहीं भूलूँगी क्योंकि हमने अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरे आत्मविश्वास से निभाईं और यह साबित कर दिया कि हम भी इस तरह के कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं।"* यह साफ़ दिखता है कि यह सब कर पाने से मिली सन्तुष्टि से महिला, शिक्षकों के आत्म-सम्मान की भावना में इज़ाफा हुआ है।

सभी के लिए सुविधाजनक समय तय करने, कुछ महिला शिक्षकों के लिए दूरी की समस्या, निजी समस्याएँ और इस तरह की तमाम चुनौतियों के बावजूद एलटीएफ़ को लेकर फ़ाउण्डेशन का अनुभव काफ़ी उत्साहवर्धक रहा है। वे महिला, शिक्षक जो फ़ाउण्डेशन द्वारा आयोजित शिक्षकों के पेशेवर विकास की दूसरी गतिविधियों की पहुँच से दूर हैं, उन तक पहुँचने और उनके साथ संवाद करने की उम्मीद एलटीएफ़ ने जगाई है। इसके अनुभव से फ़ाउण्डेशन के सदस्यों को यह गहरी सीख मिली है कि महिला, शिक्षकों तक पहुँचने और उनको पेशेवर विकास गतिविधियों से जोड़ने के लिए, उनसे संवाद कर पाने के लिए यह ज़रूरी है कि उनके वास्तविक अनुभवों को और पेशेवर विकास गतिविधियों में भागीदारी की उनकी तैयारी को ध्यान में रखा जाए और इसके अनुरूप ही उनकी ज़रूरतें पूरी की जाएँ।

केस स्टडी 2 : अल्मोड़ा के पॉकेट वीटीएफ़

हिमालय की कुमाऊँनी पहाड़ियों पर समुद्र तल से 1800 मीटर की ऊँचाई पर स्थित ज़िला अल्मोड़ा में अल्मोड़ा और रानीखेत, इन दो प्रमुख शहरों को छोड़कर ज़िले में छोटे-छोटे क़स्बे और गाँव ही हैं। ज़िले के 97 फ़ीसदी

स्कूलों को 'ग्रामीण स्कूल' की श्रेणी में रखा गया है; 41 फ़ीसदी स्कूलों में बिजली नहीं है और 35 फ़ीसदी स्कूलों के लिए कोई बारामासी सड़क नहीं है।[10] पीने के लिए साफ़ पानी, बिजली जैसी कुछ बुनियादी सुविधाओं का अभाव, दुकानों की सीमित उपलब्धता, स्वास्थ्य सुविधाओं की ग़ैर-मौजूदगी अल्मोड़ा ज़िले के कई गाँवों में जीवन को बेहद चुनौतीपूर्ण बना देती है। इसके परिणामस्वरूप, अमूमन 25 फ़ीसदी शिक्षक अल्मोड़ा शहर और रानीखेत में ही रहना पसन्द करते हैं।

जिन शिक्षकों के स्कूल इन शहरों के 40 किमी के दायरे के बाहर हैं, और स्थायी निवास इस ज़िले में नहीं हैं, वे रोज़-रोज़ स्कूल तक की यात्रा के झंझट से बचने के लिए आमतौर पर स्कूल के आसपास ही रहना पसन्द करते हैं। वे शिक्षक जो इस ज़िले के स्थानीय निवासी हैं, वे अपने परिवारों के साथ ही रहना पसन्द करते हैं चाहे इसके लिए उन्हें रोज़ घर से कुछ दूर आना-जाना ही क्यों न पड़े। इन दोनों कारणों से बहुत छोटे कस्बों व बड़े गाँवों में शिक्षकों की छोटी-छोटी रिहाइशी बस्तियाँ बन गई हैं। इन बस्तियों में आमतौर पर बिजली, पानी और दूसरी ज़रूरी सुविधाएँ उपलब्ध रहती हैं। लेकिन इसके बावजूद, ऐसी बस्तियों में भी शिक्षकों को पेशेवर विकास के लिए संसाधन और मौक़े मुश्किल से ही मिल पाते हैं।

यह अध्ययन पॉकेट वीटीएफ़ वाले उन इलाक़ों के शिक्षकों की दशा व पेश आने वाली चुनौतियों की जानकारी देता है। साथ ही, यह इन फ़ोरमों में भागीदारी के शिक्षकों के अनुभव पर भी रोशनी डालता है। यह अध्ययन जिन आँकड़ों पर आधारित है, वे ऐसे 4 रिहायशी इलाक़ों के 8 शिक्षकों और इन फ़ोरमों के सत्रों को फ़ैसिलिटेट करने वाले फ़ाउण्डेशन के 3 सदस्यों के अर्ध-व्यवस्थित साक्षात्कारों से लिए गए हैं। कुछ दस्तावेज़ों, जैसे कि, बैठकों के मिनट व रपटों का भी विश्लेषण किया गया। इस अध्ययन में जनवरी 2016 से जनवरी 2018 के बीच हुई पॉकेट वीटीएफ़ की बैठकों को शामिल किया गया है।

इन इलाक़ों में शिक्षकों के सामने खड़ी चुनौतियाँ

अपर्याप्त सार्वजनिक परिवहन के कारण इन शिक्षकों के बीच सबसे ज़्यादा प्रचलित साधन है शेयर्ड टैक्सियाँ जो स्कूल या नज़दीक की किसी जगह से उनको ले जाने व ले आने का काम करती हैं। इसके अलावा, अमूमन सभी शिक्षकों को अपने स्कूल पहुँचने के लिए कुछ ट्रेकिंग या चढ़ाई करनी ही पड़ती है। यह चढ़ाई 15 मिनट से लेकर कुछ मामलों में तो 90 मिनट तक की हो सकती है और इसमें शिक्षकों को कई बार काफ़ी जोखिम भी उठाना पड़ता है। स्कूल आने-जाने के अपने रोज़मर्रा के सफ़र के बारे में बताते हुए एक महिला, शिक्षक कहती हैं, *"मुझे अपने स्कूल पहुँचने के लिए एक नदी पार करनी पड़ती है जिसपर कोई पुल भी नहीं है। बारिश के मौसम में यह बेहद ख़तरनाक हो जाता है।"*

दिसम्बर से फरवरी के बीच जाड़े के दिन तो ख़ासतौर से मुश्किल भरे होते हैं जब ज़्यादातर जगहों पर तापमान बहुत ही कम हो जाता है। इस मौसम में सिर्फ़ कड़ाके की ठण्ड की समस्या नहीं होती, पीने के पानी की भी क़िल्लत हो जाती है। बहुत सारे गाँवों में पीने के पानी की सप्लाई नहीं है और अगर है भी तो पानी बहुत ही अनियमित आता है। शिक्षकों को सुबह पहले अपने घरों के लिए पानी जुटाना पड़ता है और फिर मध्याह्न भोजन के लिए स्कूल में भी पानी का इन्तज़ाम करना होता है। मानसून के महीनों में यह समस्या थोड़ी कम ज़रूर हो जाती है लेकिन सूखे दिनों में यह समस्या फिर विकट हो जाती है।

मेडिकल सुविधाएँ सिर्फ़ अल्मोड़ा और रानीखेत में उपलब्ध हैं। सबसे नज़दीकी

10. डाइस (DISE) का आँकड़ा, 2016–17

अस्पताल हल्द्वानी में है, जो अल्मोड़ा और रानीखेत से 70-80 किमी की दूरी पर है, या फिर बरेली में जो और भी ज़्यादा दूर है। बेहद ख़राब परिवहन सुविधाओं के कारण यह समस्या और भी विकट हो जाती है। बसें कम ही चलती हैं। टैक्सियाँ उपलब्ध तो हैं मगर वो पूरी सवारी भर कर ही चलती हैं। जिसके चलते अगर वहाँ जाना पड़ जाए तो शिक्षकों को स्कूल से छुट्टी लेनी पड़ती है।

इनमें से कई शिक्षक एकल शिक्षक स्कूलों में पढ़ाते हैं जिसके चलते उनके पास किसी सहकर्मी से बातचीत या संवाद करने और सीखने व ख़ुद को विकसित करने के मौक़े भी नहीं होते। ज़िले के 1600 प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्कूलों में कुल 2941 शिक्षक हैं।[11] एक महिला शिक्षक ने अपनी निराशा को कुछ इन लफ़्ज़ों में बयाँ किया, *"मैं स्कूल में ख़ुद को बहुत अकेला महसूस करती हूँ। एक बार मैं क्लास में सौर मण्डल के बारे में पढ़ा रही थी और किसी बिन्दु पर ख़ुद मुझे थोड़ी कन्फ़्यूज़न हुई; लेकिन वहाँ कोई और था ही नहीं जिससे मैं बात कर पाती।"* इस तरह सामाजिक अकेलापन पेशेवर अकेलेपन के चलते और भी गहरा हो जाता है। कुछ ऐसी ही बात एक दूसरे शिक्षक ने भी कही, *"ऐसा महसूस होता है कि मैं किसी खाई में फँसा हुआ हूँ। नई-नई जानकारियाँ पाने का यहाँ कोई साधन ही नहीं है। मुझे तो यह भी नहीं पता कि बाहर की दुनिया में क्या हो रहा है। इस जगह पर तो इंटरनेट भी ठीक से काम नहीं करता।"*

ब्लॉक रिसोर्स सेंटर में कुछ किताबें ज़रूर उपलब्ध हैं मगर उनका इस्तेमाल शायद ही कभी होता है। गर्मी की छुट्टियों में आयोजित होने वाले अनिवार्य सेवाकालीन प्रशिक्षण ही पेशेवर विकास का एकमात्र ज़रिया है। लेकिन इनमें भी पेशेवर विकास के लिए ज़रूरी हर पहलू को पर्याप्त जगह नहीं मिलती। इसका नतीजा यह होता है कि शिक्षकों को अपने लिए ख़ुद ही जुगाड़ करना पड़ता है, अपने अनुभव से ही सीखना पड़ता है और स्कूल में सीखने-सिखाने की जो समस्याएँ उनके सामने आती हैं उनका हल ख़ुद ही निकालना पड़ता है। संकुल-स्तरीय मासिक बैठकों का आयोजन बहुत ही अनियमित होता है और जब वे आयोजित की भी जाती हैं तो उनका सारा ध्यान प्रशासनिक कामकाज और आँकड़े जुटाने पर रहता है।

पॉकेट वीटीएफ़ का विकास

फ़ाउण्डेशन ने उत्तराखंड में अपना काम 2010-11 में शुरू किया था और अब ये राज्य के 13 ज़िलों में से 12 में सक्रिय है। अल्मोड़ा में काम पाँच साल पहले 2013 में शुरू हुआ था। अल्मोड़ा और रानीखेत में टीएलसी की स्थापना क्रमशः 2013 व 2014 में हुई थी। ज़िले में दो-तीन साल काम करने के बाद फ़ाउण्डेशन के सदस्यों को यह समझ में आया कि टीएलसी से दूर बसे इन रिहाइशी इलाक़ों में रहने वाले शिक्षक टीएलसी में उपलब्ध संसाधनों व मौकों तक पहुँचने व उनका फ़ायदा उठा पाने में समर्थ नहीं थे। चूँकि इन रिहाइशी इलाक़ों में शिक्षकों की संख्या भी कम थी इसलिए वहाँ टीएलसी का ही कोई छोटा स्वरूप स्थापित करना भी कोई व्यावहारिक उपाय नहीं था। इस तरह इन दूर-दराज़ के इलाक़ों में बसे शिक्षकों तक पहुँचने की ज़रूरत से ही 'पॉकेट वीटीएफ़' का विचार पैदा हुआ।

सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षणों, संकुल-स्तरीय मासिक बैठकों और कार्यशालाओं के दौरान फ़ाउण्डेशन के सदस्यों ने इन रिहायशी इलाक़ों में रहने वाले शिक्षकों से बातचीत की ताकि वे उनकी ज़रूरतें समझ सकें। टीएलसी में फ़ाउण्डेशन जो विविध किस्म के क्रियाकलाप आयोजित करवाता था उसका हिस्सा बनने में इन शिक्षकों ने अपनी दिलचस्पी ज़ाहिर की लेकिन साथ ही ऐसा करने में उनके सामने जो चुनौतियाँ थीं उनको भी साझा किया। यह सब समझकर फ़ाउण्डेशन के सदस्यों ने इन

11. डाइस (DISE) 2016-17 के आँकड़े

शिक्षकों की जगह पर ख़ुद ही जाकर वहाँ स्कूल व कक्षा से जुड़े क्रियाकलापों के बारे में 2–3 घण्टे बातचीत करने का विचार सामने रखा। यह प्रस्तावित किया गया कि ये बैठकें इन रिहाइशी इलाक़ों में ही किसी सुविधाजनक जगह पर आयोजित की जाएँगी और वहाँ रहने वाले सभी शिक्षक उसमें भाग लेंगे। इस तरह, शिक्षकों के साथ मिल कर ही 'पॉकेट वीटीएफ़' की अवधारणा विकसित की गई।

तय हुआ कि फ़ाउण्डेशन के सदस्य महीने में एक बार इन जगहों पर जाएँगे और वहाँ 2–3 घण्टे की बातचीत आयोजित करने में मदद करेंगे। आमतौर पर यह बैठक इतवार, या किसी छुट्टी के दिन या फिर स्कूल समय के बाद आयोजित की जाती हैं। इसका समय शिक्षक आपसी सहमति से सबकी सुविधा को देख कर तय करते हैं। ये बैठकें स्कूल में, या फिर संकुल अथवा ब्लॉक रिसोर्स सेंटर में या किसी निजी हाल में आयोजित की जाती हैं। फ़ाउण्डेशन के सदस्यों की कोशिश यह रहती है कि जो भी जगह चुनी जाए वहाँ पीने का पानी, साफ़ शौचालय, ऑडियो-विजुअल सामग्री के लिए बिजली आदि की सुविधा उपलब्ध हो, लेकिन सबसे ज़रूरी चीज़ यह होती है कि वह जगह उस इलाक़े के सभी शिक्षकों की पहुँच में हो।

एक इलाक़े में एक या दो शिक्षक सबसे सम्पर्क करने की भूमिका निभाते हैं। वह इलाक़ा जिस ब्लॉक में आता है, वहाँ फ़ाउण्डेशन के सदस्य इन शिक्षकों से मिल कर बैठक के लिए एक सुविधाजनक तारीख़ व समय तय करते हैं। साथ ही, बैठक की जगह और बातचीत का विषय भी तय किया जाता है। फ़ाउण्डेशन के सदस्य यह सुनिश्चित करते हैं कि चयनित विषय पर सत्र की योजना तैयार की जाए, उसकी गुणवत्ता की जाँच की जाए, और ज़रूरी सामग्री (वीडियो, पठन सामग्री, सीखने-सिखाने की अन्य सामग्री) वहाँ उपलब्ध हो। टीम के सदस्यों से फ़ीडबैक लेकर सत्र योजना को अन्तिम स्वरूप दे दिया जाता है। फ़ाउण्डेशन के सदस्य यह भली-भाँति समझते हैं कि शिक्षक इन सत्रों में भाग लेने के लिए काफ़ी मेहनत करते हैं, और इसलिए यह और भी ज़रूरी हो जाता है कि वे इन सत्रों से भरपूर फ़ायदा ले सकें जिसके लिए फ़ाउण्डेशन के सदस्यों के लिए इन बैठकों कि तैयारी को पूरी सावधानी से करना और भी ज़रूरी हो जाता है।

यह समझाते हुए एक सदस्य ने कहा, *"इन मंचों में भाग लेने के लिए शिक्षक अपना निजी समय लगाते हैं। इनकी योजना और क्रियान्वयन में पूरी सावधानी बरतनी ज़रूरी होती है, क्योंकि अगर शिक्षक यहाँ होने वाली बातचीत से कोई जुड़ाव नहीं महसूस करेंगे तो सम्भव है कि वे आगे इनमें भाग ही न लें।"*

पॉकेट वीटीएफ़ की शुरुआत अल्मोड़ा ज़िले के लमगारा ब्लॉक के जैंती में 2014 के अन्त में हुई थी। वर्तमान में ज़िले के चार और इलाक़ों में इनकी शुरुआत की जा चुकी है। ये हैं, कौसानी व सोमेश्वर (ताकूला ब्लॉक), सेराघाट (भैसिया छन्ना ब्लॉक) और दान्या (धौलादेवी ब्लॉक)। नीचे

तालिका–2 : वर्तमान में सक्रिय वीटीएफ़ का संक्षिप्त ब्योरा

क्रम	जगह	अल्मोड़ा से दूरी	वहाँ रह रहे शिक्षकों की औसत संख्या	वीटीएफ़ सत्रों की संख्या	अवधि	औसत सहभागिता	कुल सहभागिता (विशिष्ट शिक्षक)
1	कौसानी	52 किमी	25	2	अगस्त, 17 – जनवरी, 18	14	17

2	सोमेश्वर	42 किमी	40	6	नवम्बर, 16 – जनवरी, 18	10	21
3	सेराघाट	66 किमी	20	3	अगस्त, 17 – जनवरी, 18	6	11
4	दान्या	53 किमी	30	7	जनवरी, 16 – जनवरी, 18	8	15
5	जैंती	75 किमी	30	6	जनवरी, 16 – जनवरी, 18	7	18

दी हुई तालिका-2 में वर्तमान में ज़िले में जितने पॉकेट वीटीएफ़ चल रहे हैं उनकी जानकारी दी गई है।

यह एक ऐसा स्वैच्छिक मंच है जो शिक्षकों को अपनी बात कहने की एक जगह देता है, उनके अनुभवों की इज़्ज़त करता है और साथ ही उनको एक मौक़ा देता है कि वे कक्षा में रोज़ बरोज़ आने वाली चुनौतियों के बारे में खुलकर बातचीत कर सकें। इस स्पष्ट समझ के साथ फ़ाउण्डेशन के एक सदस्य ने कहा, *"यह कोई ऐसा मंच नहीं है जहाँ फैसिलिटेटर सभी कुछ जानता हो और दूसरे प्रतिभागियों को ज्ञान बाँटता हो। बल्कि यह एक ऐसा मंच है जहाँ सभी मिलकर बैठते हैं, अपने-अपने विचार रखते हैं और एक साझी समझ विकसित करने की कोशिश करते हैं।"* इनमें शिक्षा के बारे में व्यापक दृष्टिकोणों की, सीखने-सिखाने की पद्धतियों की, विषयवस्तु और कक्षा की चुनौतियों के बारे में बातचीत होती है। नीचे दी गई तालिका-3 में ऐसी ही एक जगह पर होने वाली बैठकों में जिन विषयों पर बातचीत होती है उनका ब्योरा दिया गया है।

शिक्षकों की प्रतिक्रिया

शिक्षकों के अनुसार, इन बैठकों में होने वाली बातचीत का स्वरूप और विषयवस्तु उनके लिए बेहद मददगार रही है। वे इन चर्चाओं को अपने लिए बेहद प्रासंगिक और अपने स्कूल व कक्षा के कामकाज से जुड़ा हुआ पाते हैं। इनमें भाग लेने वाली एक महिला शिक्षक इस बात पर सन्तोष जताते हुए कि इस मंच ने शिक्षकों को साथ बैठने और तमाम चुनौतियों व अपने विचारों पर बातचीत करने का मौक़ा दिया है, कहती हैं, *"इस साल मैं सेवाकालीन प्रशिक्षण में मात्र छह दिन ही जा सकी और वह भी ऐसे विषय में जिसे मैं पढ़ाती ही नहीं हूँ। यहाँ मैं प्राथमिक कक्षा के बच्चों के लिए अँग्रेज़ी भाषा की पठन सामग्री विकसित करने पर केन्द्रित दो सत्रों में भाग ले चुकी हूँ जो मेरी कक्षा से सीधे जुड़ा हुआ है।"* कुछ ऐसी ही बात एक और शिक्षक कहते हैं, *"एक वीटीएफ़ सत्र में हमने 'फ्रैक्शन*

तालिका–3 : वीटीएफ़ में होने वाली चर्चाओं का ब्योरा

तारीख़	जगह	विषय	विवरण	बैठक की अवधि
13/11/16	बीआरसी, सोमेश्वर	लड़कियों की शिक्षा	'कमली' फ़िल्म का प्रदर्शन	2.5 घण्टे
04/12/16	बीआरसी, सोमेश्वर	सीखने-सिखाने में स्थानीय भाषा का महत्त्व	'कफ़ल' फ़िल्म का प्रदर्शन और बातचीत	2.5 घण्टे

26/02/17	बीआरसी, सोमेश्वर	शारीरिक सज़ा	'ब्रेक टाइम' फ़िल्म का प्रदर्शन; हरि शंकर परसाई की रचना 'हम तो प्रभाकर हैं जी' का पाठ और उसपर बातचीत	3 घण्टे
16/04/17	बीआरसी, सोमेश्वर	सीखने की खोज पद्धति	पर्यावरण विज्ञान की शिक्षा पद्धति पर बातचीत	2.5 घण्टे
23/07/17	बीआरसी, सोमेश्वर	सीखने की खोज पद्धति	'गुड स्कूल'[14] वीडियो का प्रदर्शन और बातचीत	2.5 घण्टे

वॉल'[13] की अवधारणा पर बातचीत की। उसके आधार पर अपनी कक्षा के बच्चों के साथ मैंने वही चर्चा की और इस बार वे इस अवधारणा को पिछली बार से कहीं बेहतर ढंग से समझ सके जब मैंने केवल उसके सैद्धान्तिक पक्ष पर ही ध्यान दिया था।"

कुछ शिक्षकों को तो यह महसूस हुआ कि एक दिन की यह बैठकें पाँच-छह दिन के प्रशिक्षण से ज़्यादा फ़ायदेमन्द हैं। आमतौर पर लम्बे प्रशिक्षण गर्मी की छुट्टियों में आयोजित किए जाते हैं और जब तक शिक्षक वापस कक्षा में जाते हैं, उसमें से काफ़ी कुछ भूल चुके होते हैं। इसके उलट, जहाँ तक इन मंचों का सवाल है, शिक्षक अगले ही दिन स्कूल जाते हैं और अगर वह कक्षा में पढ़ाए जा रहे विषय के लिए प्रासंगिक हो तो उन्होंने जो बातें सीखी हैं उसे कक्षा में सीधे लागू कर सकते हैं।

लेकिन तमाम ख़ूबियों के बावजूद इन मंचों की भी अपनी चुनौतियाँ हैं। दूर-दराज़ के कुछ गाँवों में कई बार ऐसी जगहें मिलना बड़ा मुश्किल हो जाता है जहाँ बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध हों। स्कूलों और रिसोर्स सेंटरों में आमतौर पर पीने के पानी और बिजली जैसी सुविधाओं का अभाव होता है। कुछ में ठीक-ठाक शौचालय भी नहीं होते। फ़ाउण्डेशन के सदस्य ऐसे में निजी हॉल बुक करने की कोशिश करते हैं मगर यह विकल्प भी हर बार नहीं होता। इन तमाम दिक़्क़तों के कारण कई बार इन मंचों की बैठकें खस्ताहाल जगहों पर भी करनी पड़ी हैं जहाँ बुनियादी सुविधाएँ भी नहीं होतीं।

इसके अलावा, इतवार को, या छुट्टी के दिन या स्कूल के घण्टों के बाद ऐसा समय तय कर पाना भी कई बार बड़ा मुश्किल होता है जो सभी 10-15 शिक्षकों के लिए सुविधाजनक हो। बहुत सारे शिक्षकों को निजी काम होते हैं या उनको अपने घर जाना होता है जो किसी दूसरी जगह पर होता है। एक शिक्षक ने अफ़सोस के साथ बताया, *"कई बार ऐसा होता है कि लाख चाहने के बावजूद निजी व्यस्तताओं के चलते फ़ोरम की बैठकें अटेंड कर पाना नामुमकिन हो जाता है।"* आमतौर पर फ़ाउण्डेशन के सदस्य यह लक्ष्य रखते हैं कि कम-से-कम सात से आठ शिक्षकों का कोरम हर बैठक में पूरा हो, लेकिन ऐसी परिस्थितियाँ भी बनी हैं जब चार से छह शिक्षकों के साथ ही बैठक करनी पड़ी है।

कुछ इलाक़े इतने दूर-दराज़ होते हैं कि उन तक पहुँच पाना फ़ाउण्डेशन के सदस्यों के लिए भी बेहद चुनौतीपूर्ण होता है। शिक्षकों की

13. 'फ़्रैक्शन वॉल' एक तरह की तस्वीर है जिसमें भिन्नों को दीवार की शक्ल में दिखाया जाता है। इसका इस्तेमाल भिन्नों की तुलना करने के लिए किया जाता है और साथ ही, समतुल्य भिन्नों की पहचान के लिए भी किया जा सकता है।

14. 'गुड स्कूल' एक वीडियो श्रृंखला है जिसका निर्माण फ़ाउण्डेशन द्वारा किया गया है जिसमें अलग-अलग सरकारी स्कूलों में कामकाज के अच्छे तौर-तरीक़ों को दिखाया गया है।

ही तरह इनको भी ऐसे इलाक़ों में पहुँचने के लिए निजी टैक्सियों पर निर्भर रहना होता है। इसके चलते फ़ोरम की बैठकों की निरन्तरता प्रभावित होती है।

इन तमाम चुनौतियों के बावजूद, सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षकों को यह मंच किसी तरह की आक्रामकता से रहित, सुरक्षित, और सुविधाजनक जगहें लगती हैं जहाँ वे अपनी समस्याएँ और चुनौतियाँ खुलकर रख सकें बिना इस डर के कि वहाँ कोई उनके बारे में नकारात्मक राय बनाएगा। उनको यह विश्वास है कि अगर उनकी समस्याओं का वहाँ कोई हल नहीं मिला तब भी कम-से-कम उनकी आवाज़ सुनी जाएगी और उसकी इज़्ज़त की जाएगी। इन बैठकों में भाग लेने वाली एक महिला शिक्षक ने फ़ोरम पर भरोसा जताते हुए कहा, *"मुझे यह बैठकें इसलिए पसन्द हैं क्योंकि वहाँ मैं खुल कर बोल सकती हूँ और अपनी चुनौतियों को सबसे साझा कर सकती हूँ। कोई मेरे बारे में नकारात्मक राय नहीं बनाएगा या मुझे हेय नहीं समझेगा, बल्कि यहाँ पर लोग मेरी समस्याओं के हल ही सुझाएँगे।"*

पॉकेट वीटीएफ़ की चुनौतियों, उनसे मिली सीखों व शिक्षकों के फ़ीडबैक और साथ ही इनकी गुणवत्ता व पहुँच को बेहतर बनाने को लेकर फ़ाउण्डेशन के सदस्य जिस तरह लगातार चिन्तन-मनन करते हैं, उसके चलते ऐसे फ़ोरमों में यह सम्भावना है कि वे आगे जाकर शिक्षकों के लिए पियर लर्निंग के एक मज़बूत मंच की तरह विकसित हों।

केस स्टडी 3 : किवारली का लर्निंग व रिसोर्स सेंटर

राजस्थान के सिरोही ज़िले के किवारली गाँव के बिलकुल बीचोबीच एक इमारत में स्थित लर्निंग एण्ड रिसोर्स सेंटर (एलआरसी)[15] में कुछ कमरे हैं जिनका हाल ही में रंग-रोगन हुआ है, एक लाइब्रेरी है, इधर-उधर बिखरे कुछ मेज़, कुर्सियाँ, दरियाँ और कुछ कम्प्यूटर हैं। ऊपरी तौर पर देखें तो यह भी बाक़ी सेंटरों जैसा ही दिखता है जिनकी स्थापना फ़ाउण्डेशन ने राजस्थान में की है सिवाय एक अन्तर के इस सेंटर को चलाने और इसके प्रबन्धन की ज़िम्मेदारी गाँव के लोगों के हाथ में है।

यह सेंटर हर रोज़ सुबह 10 बजे खुलता है। सामान्यतः इस सेंटर को विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवा खोलते हैं और वे दोपहर 2 बजे तक वहीं रहते हैं। वे अपने पढ़ने की सामग्री अपने साथ ही लाते हैं। इसके अलावा, वे सेंटर में उपलब्ध विभिन्न सामग्रियों का भी इस्तेमाल करते हैं, जैसे– किताबें, पत्रिकाएँ आदि। लगभग साढ़े तीन बजे, अपने स्कूलों से छुट्टी पाकर बच्चे वहाँ आ जाते हैं। वे वहाँ उनको जो भी अच्छा लगता है, करते हैं- मसलन, किताबें पढ़ना, चित्रकारी करना, खेल खेलना और इसके लिए वे वहाँ उपलब्ध सामग्री का भी इस्तेमाल करते हैं। शिक्षक आमतौर पर शाम 5 से 7 के बीच आते हैं। वे वहाँ लाइब्रेरी का इस्तेमाल करते हैं, एक-दूसरे से बातचीत करते हैं या फिर वहाँ मौजूद युवाओं व बच्चों से बातचीत करते हैं। हफ़्ते में दो या तीन दिन फ़ाउण्डेशन के सदस्य भी दोपहर के बाद वहाँ दौरा करते हैं। इनमें से ज़्यादातर दिनों में बच्चों या शिक्षकों या व्यापक समुदाय के लिए सेंटर पर कुछ गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। रात 9 बजे के आसपास सेंटर बन्द होता है।

इस तरह एलआरसी शिक्षकों के लिए आपस में संवाद करने की एक जगह के रूप में विकसित हुआ है। इस केन्द्र ने शिक्षा को गाँव के समुदाय की कल्पना और उनके रोज़मर्रा के जीवन के केन्द्र में ला दिया है। किवारली के सरकारी स्कूल के एक शिक्षक ने बताया,

15. हालाँकि सभी टीएलसी हर उस व्यक्ति के लिए खुले हुए हैं जिसकी उनमें दिलचस्पी हो, लेकिन कुछ जगहों पर, जैसे कि राजस्थान में इन सेंटरों को बहुत सोच-समझ कर शिक्षकों की जगह के अलावा 'सामुदायिक' जगहों के रूप में विकसित किया गया है और इनको 'लर्निंग एण्ड रिसोर्स सेंटर' का नाम दिया गया है।

"लर्निंग रिसोर्स सेंटर की स्थापना हम सभी के लिए एक वरदान की तरह है। पहले बच्चे स्कूल के बाद आमतौर पर टीवी देखते थे या गाँव में इधर-उधर घूमते रहते थे। अब स्कूल से लौटते ही वे तुरन्त लाइब्रेरी जाने की ज़िद करने लगते हैं। वहाँ पढ़ने के अलावा वे विभिन्न गतिविधियों में भी भाग लेते हैं। वहाँ जिस तरह की चर्चाएँ होती रहती हैं उससे बच्चे बहुत सारे मुद्दों के बारे में संवेदनशील हो रहे हैं।" किवारली के शिक्षकों के लिए एलआरसी व्यक्तिगत व पेशेवर दोनों तरह के संवाद बनाने का एक मंच बन कर उभरा है। इसके अलावा, सेंटर ने उनको ऐसे संसाधन मुहैया कराए हैं जिनका इस्तेमाल बाद में वे अपनी कक्षाओं में भी कर सकते हैं।

फ़ाउण्डेशन का एक नज़रिया रहा है कि शिक्षकों और दूसरे साझेदारों के लिए लर्निंग सेंटर ऐसी जगह पर स्थापित किए जाएँ जो अधिक से अधिक साझेदारों और ख़ासतौर से शिक्षकों की पहुँच में हो। किवारली सेंटर में इसी नज़रिए को स्थानीय सन्दर्भ के अनुसार समायोजित किया गया है। राजस्थान में एलआरसी पहले पहल 2012 में, टोंक और सिरोही ज़िलों में शुरू किए गए थे। ये उस समय ब्लॉक हेडक्वार्टरों में स्थित थे। बाद में, जैसे-जैसे काम बढ़ता गया इन सेंटरों को 'शिक्षकों के मोहल्लों' में बनाया जाने लगा ताकि अधिक-से-अधिक शिक्षक इन तक पहुँच सकें। शिक्षकों के मोहल्ले किसी ब्लॉक में स्थित वे इलाक़े थे जहाँ शिक्षकों की एक बड़ी संख्या रहती हो। लेकिन इसके बावजूद, अभी भी ऐसे शिक्षक थे जिनके घर इन सेंटरों से अच्छी-ख़ासी दूरी पर थे जिसके कारण वे इन जगहों का फ़ायदा नहीं उठा पा रहे थे। दूर-दराज़ इलाक़ों में रहने वाले इन शिक्षकों तक पहुँच पाना एक बड़ी समस्या थी जिसका हल जल्द-से-जल्द ढूँढ़ना ज़रूरी था।

इस चुनौती का समाधान निकालने के लिए, ऐसे छोटे-छोटे सैटेलाइट सेंटरों की अवधारणा विकसित की गई जो मुख्य एलआरसी की परिधि में स्थित हों। ये सैटेलाइट एलआरसी ऐसे गाँवों में स्थापित किए गए जो ब्लॉक हेडक्वार्टरों से थोड़ी दूरी पर थे और जहाँ शिक्षकों की ठीकठाक संख्या रहती हो। चूँकि ये जगहें काफ़ी दूर-दराज़ के इलाक़ों में होती हैं और ऐसे हर एक गाँव में इस काम के लिए स्टाफ़ नियुक्त करना मुश्किल होता है, इसलिए इन जगहों पर स्थानीय शिक्षकों और समुदाय को सेंटर चलाने की ज़िम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

किवारली सिरोही ज़िले के आबू रोड ब्लॉक का सबसे बड़ा गाँव है जिसमें 805 परिवार रहते हैं। यह गाँव ज़िला हेडक्वार्टर से महज़ 12 किमी. की दूरी पर स्थित है। इस ब्लॉक के दूसरे गाँवों की तुलना में इस गाँव की साक्षरता दर ज़्यादा है। पुरुष साक्षरता दर 71.83% और महिला साक्षरता दर 44.27% है।[16] आबू रोड के

तालिका–4 : मुख्य गतिविधियाँ व उपलब्धियाँ

अवधि	गतिविधियाँ व उपलब्धियाँ
दिसम्बर 2015 से मार्च 2016	· बड़े कार्यक्रमों व व्यक्तिगत संवादों के ज़रिए मेलजोल बढ़ाना
अप्रैल 2016	· सभी पक्षों के बीच एलआरसी के शुरुआती विचार को रखा गया · टीम : – किवारली के सम्बन्ध में कुछ ख़ास ज़िम्मेदारियाँ सिरोही में स्थित फ़ाउण्डेशन की टीम को दी गईं – शिक्षकों की एक कोर टीम का गठन · मेलजोल बढ़ाने और लोगों को जोड़ने का काम जारी

16. भारत की जनगणना 2011

मई 2016	· एलआरसी की अवधारणा व दृष्टि को समुदाय के बीच रखा गया · मेलजोल बढ़ाने और लोगों को जोड़ने का काम जारी
जून 2016	· एलआरसी की स्थापना के विचार को विस्तार से सबके सामने रखा गया और उसके लिए उपयुक्त जगह की तलाश शुरू कर दी गई · मेलजोल बढ़ाने और लोगों को जोड़ने का काम जारी
जुलाई 2016 से अगस्त 2016	· पंचायत की पुरानी इमारत को उपयुक्त जगह के तौर पर चिह्नित किया गया · वह इमारत एक व्यापारिक बैंक की बजाय एलआरसी के लिए दे दी जाए इसके लिए कोर टीम व समुदाय के सदस्यों द्वारा जम कर दौड़-धूप की गई व सिफारिशें करवाई गईं मेलजोल बढ़ाने और लोगों को जोड़ने का काम जारी
सितम्बर 2016 से अक्तूबर 2016	· वह जगह एलआरसी के लिए मिल गई और फिर उसकी मरम्मत के लिए समुदाय के साथ मिलकर काम किया गया · मेलजोल बढ़ाने और लोगों को जोड़ने का काम जारी
नवम्बर 2016	· वह जगह एलआरसी के लिए मिल गई और फिर उसकी मरम्मत के लिए समुदाय के साथ मिलकर काम किया गया · एलआरसी का उद्घाटन

बाद पूरे ब्लॉक में किवारली गाँव में ही सरकारी शिक्षकों की संख्या सबसे ज़्यादा है। यहाँ लगभग 90 शिक्षक हैं जो ज़िले के अलग-अलग स्कूलों में पढ़ाते हैं।

किवारली में सैटेलाइट एलआरसी के विचार की शुरुआत से लेकर उसकी स्थापना तक का जो सफ़र रहा है, उसमें सबसे ख़ास बात रही है शिक्षकों और स्थानीय समुदाय की गम्भीर और सतत भागीदारी। यहाँ जागरूकता, प्रोत्साहन और आपसी सहयोग का एक सकारात्मक चक्र चल पड़ा है जिससे इस गाँव के युवा, शिक्षा के क्षेत्र में आने के लिए बड़ी संख्या में आगे आने लगे हैं और शिक्षकों की, ख़ासतौर से महिला शिक्षकों की तो एक पूरी क़तार ही इस गाँव से निकल कर आई है। यह सहभागिता सेंटर के संचालन में अब तक जारी है। इस केस स्टडी में इसी अनुभव की बानगी दी गई है।

स्थापना तक का सफ़र

एलआरसी की स्थापना का लगभग एक साल लम्बा सफ़र दिसम्बर 2015 में तब शुरू हुआ जब शिक्षकों व दूसरे लोगों को इसके लिए लामबन्द करने की शुरुआती कोशिशें की गईं। नवम्बर 2016 को यह सफ़र अपनी मंज़िल पर पहुँचा जब एलआरसी ने काम करना शुरू कर दिया।

ऐसी तमाम वजहें थीं जो किवारली को सैटेलाइट एलआरसी के लिए बिलकुल उपयुक्त जगह बनाती थीं, लेकिन शिक्षकों व समुदाय के दूसरे सदस्यों को इस बात के लिए राज़ी करने में कि गाँव में एलआरसी की स्थापना होनी चाहिए फ़ाउण्डेशन के सदस्यों को काफ़ी ज़मीनी मेहनत करनी पड़ी। लोगों से मेलजोल बढ़ाने के लिए और जिन शैक्षणिक उद्देश्यों

17. फ़ाउण्डेशन के सदस्यों की सहायता से शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ प्रोजेक्ट पर काम करते हैं और उनसे जो काम निकलता है उसे सबके सामने प्रदर्शित किया जाता है और उसपर चर्चा भी होती है।

के लिए फ़ाउण्डेशन काम करना चाहता था, उनके प्रति जागरूकता लाने के लिए गाँव के स्कूल में कई बाल मेले[17] आयोजित किए गए। इसके साथ ही, गाँव के सभी शिक्षकों को एक स्वैच्छिक मंच पर साथ लाने की कवायद शुरू की गई जहाँ शैक्षणिक मसलों पर बातचीत की जा सके। लोगों में इन सबको लेकर उत्साह तो बहुत था मगर शुरुआती कोशिशों से अपेक्षित नतीजे नहीं निकले।

लेकिन फ़ाउण्डेशन ने अपना काम जारी रखा और अप्रैल 2016 तक अपनी कोशिशों को और भी आगे ले जाते हुए किवारली की ज़िम्मेदारी आबू रोड ब्लॉक में रहने वाले अपने कुछ सदस्यों को दी। इन सदस्यों को यह बात समझ में आई कि किवारली की स्थानीय संस्कृति, वहाँ उपलब्ध संसाधनों, वहाँ के भूगोल, इस काम में शामिल लोगों और उनके आपसी रिश्तों को समझने के लिए पर्याप्त समय व मेहनत की दरकार थी।

चाय की दुकानें, मन्दिर, वग़ैरह जैसी जगहें जहाँ लोगों का जमावड़ा लगता था, वहाँ शिक्षकों व समुदाय के अन्य सदस्यों से व्यक्तिगत तौर पर या समूह में बातचीत की कोशिशें की गईं। जैसा कि किवारली में काम करने वाले टीम के एक सदस्य ने बताया, *"हम लोग कुछ शिक्षकों को ज़रूर जानते थे लेकिन गाँव के दूसरे लोगों के लिए हम पूरी तरह अजनबी थे। शुरुआती दिनों में तो हम गाँव में बस यूँ ही घूमा करते थे ताकि वहाँ के लोगों की रोज़मर्रा की जीवनचर्या और संस्कृति के बारे में जान सकें। पहले दिन हमने गाँव का चक्कर लगाया, चाय की दुकान पर कुछ समय बिताया और वापस आ गए। अगले दिन हम स्कूल गए और शाम को थोड़ा समय गाँव में बिताया। धीरे-धीरे कुछ और शिक्षकों से हमारा परिचय हुआ। जब हमने उनसे शाम को मिलने का आग्रह किया तो उन्होंने हमें मन्दिर में मिलने को कहा। हम वहाँ थोड़ा जल्दी पहुँच गए और शिक्षकों के पहुँचने का इन्तज़ार करते रहे। इस बीच वहाँ जो और लोग आ रहे थे उनसे हमने बातचीत की और अपने बारे में भी बताया। इस तरह की बातचीत से हमारा परिचय किवारली के दूसरे लोगों से हुआ और इन लोगों ने हमें और भी ऐसे लोगों के बारे में बताया जो हमारे काम में हमारी मदद कर सकते थे।"*

लोगों से सम्बन्ध बनाने की इस शुरुआती कवायद से यह फ़ायदा हुआ कि उसके बाद जो प्रक्रियाएँ व गतिविधियाँ आयोजित की गईं उनमें शिक्षकों और समुदाय के लोगों ने न सिर्फ़ गम्भीरता से भाग लिया बल्कि उनको अपना माना। टीम के उसी सदस्य ने यह टिप्पणी की, *"इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षकों और युवाओं के साथ हमने 2-3 महीने जो काम किया और उनसे जिस तरह के सम्बन्ध बनाए उसकी ज़रूरी भूमिका थी। हमें इस बात से बड़ी ख़ुशी हुई कि गाँव के कुछ लोग एलआरसी को लेकर उतने ही चिन्तित थे और हर क़दम पर उन्होंने हमारे साथ कन्धे से कन्धा मिला कर काम किया।"*

इसी दौरान, आधे दर्जन शिक्षकों की एक कोर टीम बनाई गई। ये वो शिक्षक थे जिन्होंने इससे पहले आबू रोड स्थित एलआरसी समेत फ़ाउण्डेशन की कई और गतिविधियों में भी हिस्सा लिया था। हमारे नज़रिए को मानने वाले ये शिक्षक फ़ाउण्डेशन के कामकाज से पहले से ही परिचित थे और एलआरसी की अवधारणा को भी समझते थे। इन्होंने उस इलाक़े में हमारी पहल से सरोकार रखने वाले लोगों की संख्या को बढ़ाने में हमारी मदद की। लोगों के साथ लगातार तरह-तरह के क्रियाकलापों और बातचीत से टीम में नए-नए शिक्षक व युवा वालंटियर भी शामिल होने लगे। टीम के सदस्यों ने स्कूलों का दौरा किया, शिक्षकों से मुलाक़ात की और एलआरसी की अवधारणा को साझा किया। इसके अलावा, शाम को टीम के सदस्य गाँव की अनौपचारिक जगहों का इस्तेमाल एलआरसी के प्रचार-प्रसार के लिए और इससे जुड़े सभी भागीदारों से मेलमिलाप करने के लिए करते थे।

एलआरसी पर बातचीत के लिए औपचारिक बैठकों में भाग लेने के लिए टीम के सदस्य सभी

साझेदारों को तैयार करते थे। गाँव के ही निवासी होने के कारण उनको गाँव की राजनीति की भी समझ थी इसलिए वे फ़ाउण्डेशन के सदस्यों को ऐसे लोगों के नाम सुझाते थे जिनको इस प्रक्रिया में शामिल करने से उसके क्रियान्वयन में आसानी हो। कोर टीम की ही एक महिला शिक्षक ने समझाया, *"हमने फ़ाउण्डेशन के सदस्यों को बताया कि उनको उस इलाक़े के स्कूलों में पढ़ाने वाले हर एक शिक्षक से मिलना होगा जो गाँव में रहते हैं और वह भी एक बार से अधिक।"* इसी शिक्षिका ने यह भी बताया कि किस तरह उन्होंने फ़ाउण्डेशन की टीम को गाँव में फैले जातिवाद के बारे में आगाह किया था, *"गाँव में जातिवाद भी है। कोई भी बैठक आयोजित करने से पहले हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमने गाँव में रहने वाले हर जाति-समुदाय के शिक्षक से बात की है और साथ ही यह भी कि हर जाति-समुदाय के शिक्षक बैठक में हिस्सा भी लें।"* इस सलाह को मानते हुए फ़ाउण्डेशन के लोगों ने इस बात का पूरा ख़्याल रखा कि गाँव के हर समुदाय का बैठक में समुचित प्रतिनिधित्व हो।

यह कोर टीम की सलाह और आग्रह का ही नतीजा था कि एलआरसी को एक सरकारी इमारत यानी पंचायत के पुराने दफ़्तर में खोलने का फ़ैसला लिया गया। इसकी वजह बताते हुए एक शिक्षक ने बताया, *"यह सेंटर सभी लोगों के लिए है और हम समाज के हर तबक़े की भागीदारी और योगदान की उम्मीद कर रहे हैं। इसलिए इसे ऐसी जगह पर होना चाहिए जहाँ आने में किसी को कोई हिचकिचाहट न हो। मौजूदा हालत में हर व्यक्ति समाज के किसी ख़ास तबक़े का प्रतिनिधित्व करता है, और आमतौर पर हम हर किसी के साथ मेलजोल करने से कतराते हैं। हो सकता है निजी इमारत कुछ लोगों को एलआरसी से दूर कर दे क्योंकि हर कोई किसी ऐसे घर में जाने में सहज नहीं महसूस करता जो किसी ख़ास व्यक्ति या समुदाय का हो।"*

पंचायत को इस बात के लिए राज़ी करने में कि वह अपने पुराने दफ़्तर की इमारत को एक बैंक को किराए पर देने के अपने पुराने फ़ैसले को पलट कर एलआरसी को दे दे, कोर टीम ने कड़ी मेहनत की। पंचायत की मंज़ूरी मिलने और फिर इमारत की चाभी को फ़ाउण्डेशन की टीम के एक सदस्य के हाथ में सौंपे जाने की भारी उपलब्धि को याद करते हुए एक शिक्षक ने कहा, *"सरकारी व्यवस्था में कोई भी फ़ैसला लेना बहुत मुश्किल होता है। बैंक के साथ हुए क़रार को रद्द करना पंचायत सदस्यों के लिए आसान नहीं था। लेकिन गाँव के विभिन्न समूहों की लगातार कोशिशों ने इसे सम्भव बनाया।"*



पुरानी हालत में इमारत

लेकिन वह इमारत जिस हालत में मिली थी उसे देख कर लोगों को सदमा लग जाता। फ़ाउण्डेशन के एक सदस्य ने उसे याद करते हुए बताया, *"इमारत की हालत बहुत ख़राब थी। बरामदे में चारों तरफ़ शराब की बोतलें पड़ी हुई थीं। इमारत पूरी तरह पेड़-पौधों से ढँकी हुई थी। दीवारों पर काली काई की परत जमी हुई थी और फ़र्श भी जहाँ-तहाँ टूटी हुई थी। उसके सामने की जगह पर आसपास के घरों से कूड़ा-कचरा फेंका जाता था।"* इस मौक़े पर गाँव की कोर टीम ने फिर कमान सँभाली और फ़ाउण्डेशन टीम के सदस्यों के साथ मिल कर इमारत की साफ़-सफ़ाई और मरम्मत के काम में जुट गई। शिक्षकों ने स्थानीय स्तर पर मिल सकने वाले संसाधनों की पहचान की, विभिन्न लोगों को इस काम में जुड़ने के लिए प्रेरित

किया, और उस जगह की सफ़ाई और मरम्मत का काम पूरा हो जाए यह सुनिश्चित किया। उस समय ऐसा लगता था कि समूचा गाँव ही नहीं, बल्कि वहाँ से गुज़रने वाले मुसाफ़िर भी उसी काम में जुटे हुए थे।

जब एलआरसी खुल गया तो ऐसी व्यवस्था बनाई गई कि उसका इस्तेमाल करने वाले लोगों में से ही सभी बारी-बारी से उसे रोज़ खोलने व बन्द करने की ज़िम्मेदारी उठाएँ। केन्द्र की चाभी एलआरसी के पड़ोस के एक घर पर रखी जाती थी। सभी लोगों को यह बता दिया गया कि सेंटर हर व्यक्ति के लिए हर वक़्त खुला हुआ है और उसकी चाभी भी वहीं पड़ोस के घर में



एलआरसी बनने के बाद इमारत

रखी जाती है। जो भी वहाँ जाना चाहे उसे बस पड़ोस के घर से चाभी उठानी थी और सेंटर का ताला खोलना था। शिक्षकों की कोर टीम अलग-अलग जगहों पर लोगों को प्रेरित करती कि वे सेंटर का भरपूर इस्तेमाल करें। इसका नतीजा यह हुआ कि लोग नियमित वहाँ आने लगे और उनकी संख्या भी धीरे-धीरे बढ़ने लगी।

समुदाय में एलआरसी का योगदान

जब से एलआरसी की स्थापना हुई है, हर महीने एक कैलेंडर बनाया जाता है और शिक्षकों, बच्चों व समुदाय के अन्य सदस्यों के लिए विशिष्ट गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। गतिविधियों का कार्यक्रम तय करने के अलावा, सभी को ज़िम्मेदारियाँ भी बाँटी जाती हैं। आमतौर पर शिक्षक व युवा बच्चों के साथ काम करने की ज़िम्मेदारी लेते हैं और जिन गतिविधियों की योजना बनाई जाती है उनका क्रियान्वयन करते हैं। हर 2-3 महीने पर कोई ऐसी गतिविधि आयोजित की जाती है जिसमें सभी भाग लेते हैं। इन योजनाबद्ध गतिविधियों के अलावा बच्चे, युवा और शिक्षक नियमित तौर पर एलआरसी जाते हैं और उसके कामकाज व ज़िम्मेदारियों के बारे में छोटी-छोटी बैठकें करते हैं। शिक्षक सेंटर में आने वाले बच्चों व युवाओं के साथ संवाद करते हैं और अकादमिक मामलों में भी उनकी मदद करते हैं।

शिक्षकों के लिए, एलआरसी अन्ततः जिनके लिए बनाया गया है, एलआरसी ने व्यक्तिगत व पेशेवर संवाद के लिए एक मंच मुहैया कराया है। एलआरसी में वीटीएफ़ की बैठकें हर महीने आयोजित की जाती हैं। बैठक का विषय ख़ुद शिक्षक ही चुनते हैं। इस तरह की गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लेने से शिक्षकों का आत्मविश्वास भी बढ़ा है। बहुत सारे शिक्षकों ने खुल कर अपनी बात कहना सीखा है और किसी समूह में अपने विचार रखने से वे नहीं हिचकते हैं। एलआरसी में वे ऐसे संसाधनों की पड़ताल करते हैं जिनका इस्तेमाल वे अपनी कक्षा में कर सकें। साथ ही, वे नई-नई पद्धतियों के साथ प्रयोग करने को भी तैयार हैं। नियमित रूप से सेंटर आने और वीटीएफ़ की बैठकों में आने वाले एक शिक्षक ने कहा, *"अपने विषयों के अलावा हम हमेशा ही सामान्य अभिरुचि के दूसरे विषयों जैसे, भ्रूण हत्या, लड़कियों की शिक्षा आदि के बारे में बात करना चाहते थे। वीटीएफ़ के सत्रों में होने वाली चर्चाओं से हमें तमाम मुद्दों के बारे में सामग्री व उनके स्रोत इकट्ठा करने में और बच्चों के साथ इन संवेदनशील मसलों पर चर्चा शुरू करने व उसे आगे ले जाने में मदद मिली।"*

बच्चे एलआरसी में नियमित तौर पर आते हैं। हर रोज़ औसतन 15 बच्चे आते हैं और जिस दिन कोई गतिविधि आयोजित की जाती है उस

दिन तो यह संख्या 20-25 तक पहुँच जाती है। कुछ बच्चे सेंटर में मुहैया कराए गए खेल खेलते हैं और कुछ किताबें पढ़ते हैं। कुछ शिक्षकों को भी बच्चों के साथ मिलकर फ़िल्म प्रदर्शन और चित्रकारी जैसी गतिविधियाँ करते हुए देखा गया है। एलआरसी के खुले और आज़ाद माहौल के बारे में बताते हुए एक और बच्चे ने समझाया, *"किताबों के अलावा, यहाँ पर हम कुछ अच्छी फ़िल्में और वृत्तचित्र भी देख सकते हैं। सबसे बड़ी बात यहाँ का 'भयरहित' माहौल है; हमें जो किताब अच्छी लगती हो वह हम पढ़ सकते हैं और बोर्ड पर लिख भी सकते हैं।"*

समुदाय के लिए यह सेंटर एक-दूसरे से मिलने-जुलने के लिए जगह भी मुहैया कराता है और साथ ही व्यक्तियों को सीखने के तमाम मौक़े व संसाधन भी। वे लोग जो पढ़ाई-लिखाई से कोसों दूर थे वे अब सेंटर में उपलब्ध संसाधनों व सुविधाओं का लाभ उठाते हैं। ऐसा एक उदाहरण समुदाय की महिलाओं का है जो कभी-कभार सेंटर आती हैं। बच्चे जो किताबें घर ले जाते हैं घर की महिलाएँ उनको पढ़ती हैं। एक गृहिणी ने हमें बताया, *"मुझे पढ़ना अच्छा लगता है। हम अपने ख़ाली समय में पढ़ सकते हैं। मेरे बच्चे अब बड़े हो रहे हैं। अब मैं ऐसी किताब ढूँढ़ रही हूँ जो यह बताए कि किशोरावस्था से जुड़े मसलों पर बच्चों से किस तरह बातचीत की जाए व उनका मार्गदर्शन कैसे किया जाए।"*

सेवानिवृत्त शिक्षक न सिर्फ़ वहाँ अपने ख़ाली समय का सदुपयोग करते हैं बल्कि बच्चों व शिक्षकों के साथ होने वाले संवादों की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में अपना योगदान भी करते हैं। ऐसे ही एक सेवानिवृत्त शिक्षक ने कहा, *"बिलकुल शुरू से ही- सेंटर के बनने से लेकर इसके कामकाज शुरू करने तक- फ़ाउण्डेशन के सदस्य जिस तरह से किवारली के लोगों के साथ पेश आए हैं वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा है। बच्चे, युवा, शिक्षक, यहाँ तक कि गाँव के बड़े-बुज़ुर्ग सभी इन लोगों से बहुत प्रभावित हैं। फ़ाउण्डेशन के सदस्यों का व्यवहार अच्छा था और वे सबके साथ इज़्ज़त से पेश आते थे।"*

इस उत्साहजनक शुरुआत के बावजूद इस बात को लेकर तमाम शंकाएँ प्रकट की जाती हैं कि क्या यह उत्साह लम्बे समय तक टिक सकेगा। जैसा कि टीम के ही एक सदस्य ने बताया, *"किवारली के ज़्यादातर निवासियों के पास खेती की ज़मीन और मवेशी हैं जो अच्छे-ख़ासे समय की माँग करते हैं। आमतौर पर वे स्कूल से वापस आने के बाद इन सब पर काम करते हैं। इसके चलते उनके लिए नियमित तौर पर सेंटर आना मुश्किल होता है। लेकिन जब हम गतिविधियाँ और कार्यक्रम आयोजित करते हैं तब वे (शिक्षक व समुदाय के बुज़ुर्ग सदस्य) न सिर्फ़ बड़ी संख्या में एलआरसी आते हैं बल्कि उनकी तैयारी में व लोगों को बुलाने में मदद भी करते हैं।"* इस तरह, समुदाय के खुले सहयोग और फ़ाउण्डेशन के सदस्यों के लगातार प्रयासों को देखते हुए यह उम्मीद पैदा होती है कि किवारली का एलआरसी शिक्षकों व समुदाय के दूसरे लोगों के लिए सीखने की एक जीवन्त जगह के रूप में विकसित होता रहेगा।